ॐ सोऽहम् ॐ

श्री परमात्मने नमः

अनन्त् श्री विभूषित् स्वामी श्री सत्यानन्द जी महाराज

के परम् शिष्य

श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ अनन्त् श्री विभूषित्

श्री श्री 1008 संत श्री ज्ञानानन्द जी महाराज

"श्री वेदान्त अनुभव भजनावली"

—:: **नोट** ::—

इस ग्रंथ का प्रकाशन **"आध्यात्मिक गौ सेवा संस्थान लोहरवाड़ा"** के स्वाधीन रखा गया है। अतः उक्त ट्रस्ट की स्वीकृति बिना कोई भी सज्जन किसी भी भाषा में प्रकाशित नहीं करें।

ॐ सोऽहम् ॐ

जीवन–परिचय

संवत् 2039 का हम, जन्में 9 बजे रात।
पिता हरनाथ जी, मथुरा मेरी मात।।
मथुरा मेरी मात, नाम ज्ञानानन्द जानो।
गुरु सत्यानन्द जी, ग्राम लोहरवाड़ा मानो।।
प्रसन्न मम बहन है, श्री धन्ना है भ्रात।
तहसील हमारी पीपलू,टोंक जिला दरसात।।

प्रथम संस्करण 2007 प्रतियां – 1100
द्वितीय संस्करण 2026 प्रतियां – 1100

मूल्य : 280/–

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्‌दुःखभग्भवेत्।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

धर्म की जय हो ! अधर्म का नाश हो !
प्राणियों में सद्‌भावना हो ! विश्व का कल्याण हो !

ॐ सोऽहम् ॐ

–:: भूमिका ::–

सत् सोऽहम् ! यद्यपि वेदान्तशास्त्र का सिद्धान्त उपनिषदों में प्रतिपादित, ब्रह्मसूत्र में निर्णित तथा श्रीमद्भगवद्‌गीता में सुबोध रूप से प्रकाशित है तथापि उसका वास्तविक तात्पर्य केवल शब्दज्ञान से उपलब्ध नहीं होता। शास्त्र प्रमाण है परन्तु उसका रहस्य ब्रह्मनिष्ठ सद्‌गुरु के उपदेश, संतों के अनुभव, निर्मल अन्तःकरण तथा निरन्तर आत्मविचार से ही प्रकाशित होता है। अतः शास्त्र और अनुभव में कोई विरोध नहीं बल्कि अनुभव ही शास्त्र का परिपाक है और शास्त्र ही अनुभव का प्रमाण है।

इसी उद्देश्य से प्रस्तुत **"श्री वेदान्त अनुभव भजनावली"** का प्रणयन किया गया है। इसमें उपनिषद् ब्रह्मसूत्र तथा श्रीमद्भगवद्‌गीता के अद्वैत सिद्धान्त का सार ब्रह्मनिष्ठ संत–महापुरुषों के उपदेशों तथा आत्मचिन्तन से प्राप्त अनुभूतियों के साथ सरल भाषा में निरूपित किया गया है। यहाँ प्रतिपादित प्रत्येक विषय का उद्देश्य वाद–विवाद उत्पन्न करना नहीं अपितु साधक को आत्मस्वरूप की ओर प्रवृत्त करना है।

ग्रन्थ में गुरु–महिमा, संत–महिमा, सत्संग–महिमा, भक्ति–महिमा, वैराग्य, विवेक, फकीरी, आत्मविचार, माया–विवेक, ब्रह्मस्वरूप तथा आत्मानुभूति आदि विषयों का पृथक–पृथक अंगों में विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है एवं अनेक चटकीली, प्राचीन एवं अर्वाचीन रसीली राग रागिनियों में भरा हुआ है। साधक यदि श्रद्धा, विनय और निरन्तर विचार के साथ इनका मनन करेगा तो

ॐ सोऽहम् ॐ

उसके अन्तःकरण की शुद्धि होकर आत्मबोध का प्रकाश अवश्य होगा।

सार रूप में :–

उपनिषद् ब्रह्मसूत्र में, गीता ग्रन्थ अनेक।
अनुभव किया सन्तों से, तांका लिखिया लेख।।
तांका लिखिया लेख, निज ब्रह्मानन्द पाया।
इसका करो विचार, छूट जावे सब माया।।
बचपना की लगन सु, करि भक्ति सदा सत्संग।
ज्ञानानन्द पुस्तक, में लिखिया सब का अंग।।

अतः इस ग्रन्थ में जो कुछ कहा गया है वह न तो कल्पना है और न नवीन मत का प्रतिपादन। यह वेदान्त–प्रस्थानत्रयी के सिद्धान्तों तथा ब्रह्मनिष्ठ संतों के अनुभूत मार्ग का विनीत संकलन है। यदि कोई मुमुक्षु श्रद्धा, गुरु–उपदेश और आत्मविचार के साथ इसका अध्ययन करे तो निश्चय ही उसके अन्तःकरण में आत्मतत्त्व का प्रकाश होगा और अविद्या–जनित मोह का क्षय होगा। यही इस ग्रन्थ के प्रणयन का उद्देश्य है साथ ही परमात्मा से प्रार्थना है कि यह विनीत प्रयास समस्त जिज्ञासुओं के लिए आत्मकल्याण का कारण बने और उन्हें अपने नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त, सच्चिदानन्द ब्रह्मस्वरूप का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हो।

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: निवेदन ::—

अक्षर ज्ञान पूरण नहीं, नहीं शास्त्र ज्ञान।
अल्प अनुभव गुरु सु किया,तांका यह प्रमाण।।
ताका यह प्रमाण, लिखिया पुस्तक के माहिं।
रह जाए त्रुटि कही, क्षमा बुद्धिजन ताहीं।।
ज्ञानानन्द यूं करे, ज्ञानी जन को प्रणाम।
जिज्ञासु आनन्दित रहो, पावो ब्रह्मधाम।।

इस ग्रन्थ में जो कुछ भी शास्त्रसम्मत तत्त्व–विवेचन आत्मानुभव का संकेत अथवा सदुपदेशरूप विचार प्रकाशित हुए हैं वे सब मेरे पूज्य सद्गुरुदेव ब्रह्मनिष्ठ संत–महात्माओं तथा उपनिषद् ब्रह्मसूत्र और श्रीमद्भगवद्गीता की कृपा का ही प्रसाद है, उनमें मेरा अपना कोई कर्तृत्व नहीं है।

यदि कहीं भाषा व्याकरण छन्द अर्थ या तत्त्व–निरूपण में कोई त्रुटि रह गई हो तो वह मेरी अल्पबुद्धि और अल्पाध्ययन का दोष है। अतः समस्त विद्वज्जनों, संत–महात्माओं और सुधी पाठकों से करबद्ध प्रार्थना है कि वे इस ग्रन्थ का गंभीरतापूर्वक अध्ययन करें तथा जहाँ कहीं कोई त्रुटि दृष्टिगोचर हो वहाँ कृपापूर्वक उसका संशोधन करें। आपका प्रत्येक संशोधन मेरे लिए गुरुकृपा के समान वंदनीय और ग्राह्य होगा।

विनीत

श्री श्री सत्य ज्ञानपीठ आश्रम के पीठाधीश्वर
श्री श्री 1008 संत श्री ज्ञानानन्द गिरी जी महाराज
आश्रमः–राणोली रोड़ पीपलू जिला– टोंक (राज.)
पिन कोड– 304801

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: विशेष नोट ::—

"पूर्व संस्करणों में भजनों की छाप में जहां **गुरु महाराज का नाम सवायनन्द जी** आया है **वहां सत्यानन्द जी पढ़ा जावे**। क्योंकि गुरु महाराज को उनके भक्तजनों द्वारा **सवायनन्द जी और सत्यानन्द जी दोनों ही नामों से पुकारा जाता है।** इसलिए भक्तजन अपनी सुविधा अनुसार जो भी नाम अच्छा लगे उस नाम को भजनों में गाने या बोलने में उपयोग कर सकते हैं।"

पुस्तक मिलने का पताः—

1. श्री श्री सत्य ज्ञान पीठ आश्रम राणोली रोड़, पीपलू, टोंक (राज.)
2. मानव कल्याण आश्रम मनस्याटीबा, प्यावड़ी पीपलू, टोंक (राज.)

ॐ सोऽहम् ॐ

—:: अनुक्रमणिका ::—

क्र	विवरण	पृ.सं.
	—:: गणपति महिमा अंग—1 ::—	
1.	साधो भाई! गणपत देव मनायो	1
2.	गणपति सुणलो अरज हमारी,	2
	—:: गुरु प्रार्थना अंग—2 ::—	
3.	आवो आवो जी गुरुजी म्हारे द्वार	3
4.	म्हारा सद्गुरु सुणल्यो पुकार, पधारो	4
5.	किस्ती आन पड़ी सागर में, सतगुरु	5
6.	सद्गुरु जी करद्यो महर, भव से पार करो	6
7.	सतगुरु जी ज्ञान बतावोला, भव से पार	7
8.	दाता ऐसा दो वरदान, कर दो हम सब का	8
9.	दास करे अरदास, त्यारों गुरु अब की घड़ी	9
10.	आप गुरु अवनाशी जी, पार करो भव जहाज	10
11.	मैं शरण पड्यो गुरुदेव, म्हारी पार करो नैया	11
12.	सद्गुरु देवा वो कृपा कीजे दीन पें	12
13.	राखोजी सद्गुरु शरणागत की लाज	13
14.	म्हारा सद्गुरु दीनदयाल काटो यम पासी	14
15.	सतगुरु आप हो गहर गम्भीरा	15
16.	हो गुरु दाता मोय, अबके लेवो जी उभार	16
17.	सतगुरु देवाओ, सुण ले म्हारी विनती	17
18.	सतगुरु जी मैं आयो शरण तुम्हारी ओ	18

ॐ सोऽहम् ॐ

क्र	विवरण	पृ.सं.
19.	ये शुभ आशीर्वाद हमारा, शिष्य होय मंगल	19
20.	तु सुणले वचन हमारा, शिष्य होय मंगल	20
	–:: गुरु चेतावनी अंग–3 ::–	
21.	आत्मज्ञान जगत के माही मोक्ष का गेला	21
22.	गुरुगम सैन पहचान, यो नर तन पावणो	22
23.	सुन ले रे मनवा गुरु शब्दों का शोर	23
24.	बिन सद्‌गुरु नहीं उतरे रे, भव सागर से पार	24
25.	मनमुखी मूरख बण मत भाई, फेर पाछो	25
26.	गुरु शरण में हो जा रे, मत लगावे बार	26
27.	भाई सद्‌गुरु चरणा में रहज्यो, मत हीजे	27
28.	मन तु गुरु मुखी ज्ञानी बन जा रे	28
29.	मन तु झुक जा रे, गुरु के आगे	29
30.	ले ले म्हारा मनवा, गुरुगम सेन विचार	30
31.	सतगुरु बिना प्राणी, भोगे चारों खानी	31
32.	ऐ मनवा गुरु गम धीरज धरो	32
33.	हरस हरस गुण गांवो रे गुरु का, गुण गांया	33
34.	थ्ये अब ज्ञानी सद्‌गुरु धारो	34
35.	थ्ये अब सतगुरु जीवन धारो	35
36.	चालो रे मनवा वीर, सतगुरु शरणा में	36
37.	सतगुरु दाता भाई परम विधाता	37
38.	मानव नांव का रे म्हारा सतगुरु है खेवणिया	38

ॐ सोऽहम् ॐ

क्र	विवरण	पृ.सं.
39.	सतगुरु शरण सदा सुख दाई	39
40.	गुरु चरणा में चित्त दीजे	40
41.	साधो भाई गुरु कहे ज्यो ही कीजे	41
42.	सतगुरु की शरण में जाणा है, जीवन मुक्ति	42
43.	अरे ब्रह्म को लिखा नहीं जाता–2	43
44.	सद्‌गुरु बिना प्राणी, जीव जो अनाथ है	44
45.	सद्‌गुरु जी से प्रीत लगाल्यो रे, काट मोह	45
46.	सद्‌गुरु से ज्ञान लिखाले रे, उतरे भव जल	46
47.	हेली ये करले गुरु जी की सेवा री, सेवा में	47
48.	ऐ मन सद्‌गुरु का चरणा में, बहवे ज्ञान	48
49.	पीले रे मनवा, गुरुगम ज्ञान जड़ी	49
50.	सद्‌गुरु बिना मुक्ति मिले ही कौन्या	50
51.	मानव कर सतगुरु हेत, चेत निज आत्म पावो रे	51
	–: गुरु महिमा का अंग–4:–	
52.	ओ म्हारा सतगुरु है धणी रे, म्हारा सतगुरु	52
53.	सद्‌गुरु जी ने कीना उपकार, ज्ञान हमको	53
54.	सद्‌गुरु भलो कियो उपदेश, सत की राहि	54
55.	सद्‌गुरु भलो कियो उपकार, भव से पार	55
56.	मैं तो जाण लियो रे भाई, आत्मपूरण राम	56
57.	म्हारा सत्गुरु कर दिया महर, भव से तार	57
58.	म्हाने हीवड़े में बस गया ज्ञानी गुरुदेव	58

ॐ सोऽहम् ॐ

क्र	विवरण	पृ.सं.
59.	सतगुरु यूँ समझाया ये	59
60.	प्रीत लगी गुरुदेव से, देव अनोखा पा लिया	60
61.	सतगुरु जी कर दिया महर, भव से तारन की	61
62.	सद्गुरु देव दिखाया रे	62
63.	म्हारा सतगुरु को उपकार, भूलूं नहीं एक	63
64.	सद्गुरु निज तत्व लिखाया रे	64
65.	हां रे भाग मेरा चौखा रे	65
66.	सद्गुरु सामर्थ दीन दयालु, सुष्टि रचना	66
67.	मैं अब सद्गुरु जी को ध्याया	67
68.	पाया है हमने, सतगुरु जी से निज सार	68
69.	सतगुरु जी के शरणे, अब मोहे जाण पड़ी	69
70.	सद्गुरु जी मिलग्या ज्ञानी, दुनिया से न्यारा	70
71.	सन्तो भाई खोल्या भरम का ताळा	71
72.	गुरु वचनों से पाया रे, परमानन्द की सीर	72
73.	म्हारा सतगुरु दिया लखाई, घट में देव	73
74.	मैं तो हो गया चकनाचूर, सतगुरु कृपा से	74
75.	धन–धन रे सतगुरु, तुमको बारम्बार	75
76.	मैं आदू धाम का वासी रे, गुरु बतायो गेल	76
77.	प्यारो लागे ओ सद्गुरु जी म्हाने थांको	77
78.	हो सा म्हाने सत्गुरु जी समझाया लोई	78
79.	धन–धन रे म्हारा ज्ञानी रे गुरां ने बेड़ा भव	79

ॐ सोऽहम् ॐ

क्र	विवरण	पृ.सं.
80.	साधो भाई गुरु गम निश्चय पायो	80
81.	हो म्हाने जीवन मुक्त कराया ये लोय	81
82.	म्हारा सद्गुरु जी कीना उपकार, ज्ञान मोहे	82
83.	म्हारा सतगुरु सैन बताया सा, पाया आत्म	83
84.	सद्गुरु भलो करयो उपकार, भव से पार	84
85.	मोती निपज्या गुरु चरणा में, आज अमीरी	85
	–:: सत्संग प्रार्थना का अंग–5::–	
86.	मोहे सत्संग प्यारी लागे सा, कृपा करो	86
87.	दिलाना स्वामी सत्संग तुम्हारी ओ	87
88.	सतगुरु सत्संग देवो दाता	88
89.	मोहे आशा भारी लागी सा, सत्संग दो	89
90.	ओ सामर्थ सत्संग देवो दाता,	90
	–:: सत्संग चेतावनी का अंग–6 ::–	
91.	जगत में सत्संग है गंगा नालों जिसका जी	91
92.	ओ सत्संग हो जग में, अमी रस भरया ओ	92
93.	ओ सत्संग जग में तारण हारी ओ,	93
94.	ओ सत्संग में लाभ घनेरा रे, देखो कोई	94
95.	बिन सत्संग के नहीं होवे रे, आत्म का विवेक	95
96.	ओ सत्संग भवतिरणे की नाव, बैठ जा मन	96
97.	मानव कर ले रे सत्संग, नर तन मिलियो	97
98.	ओ सत्संग है जग में परम पवित्र गंगा	98

ॐ सोऽहम् ॐ

क्र	विवरण	पृ.सं.
99.	ओ सत्संग की महिमा, काँई करूं बखान	99
100.	ऐ इतना तो कर ले बन्दे, सत्संग माही आके	100
101.	जगत में सत्संग है सुख धारा, जहां ने पीये	101
102.	हाँ सत्संग में सुरत लगाले रे, छोड़ जगत	102
103.	सत्संग है गंगा नीर, न्हाले चावे तो	103
	—:: सत्संग महिमा का अंग—7 ::—	
104.	ओ सत्संग में सुरता लागी सा, पायो आत्म	104
105.	प्रभू की दया से हमको, मिल गया सत्संग	105
106.	हाँ सत्संग का मौखा मिल गया रे, सतगुरु	106
107.	हाँ सत्संग में हीरा पाया सा, गयी गरीबी	107
108.	हाँ सत्संग का मौखा मिल गया रे, दरश्या	108
109.	सत्संग से प्रीति लागी रे, म्हारी मन की	109
110.	हाँ सत्संग में आनन्द आयो सा, सफल	110
111.	म्हारे सत्संग मन में भाई सा, लागी लगन	111
112.	अवसर आग्यो रे सत्संग को	112
113.	ओ म्हारो धुल गयो मन को मेल, सत्संग	113
114.	म्हारे साधा की संगत में, रंग राम को	114
115.	पाया रे पाया, सत्संग में मोती पाया	115
116.	म्हारे सत्संग के माहिने, रंग ज्ञान को लाग्यो	116
117.	प्रीतम पाया रे सत्संग में, म्हारो जाग्यो	117
118.	ओ म्हारे विवेक उर में जाग्यो सा, सत्संग	118

ॐ सोऽहम् ॐ

क्र	विवरण	पृ.सं.
	—:: भक्ति का अंग—8 ::—	
119.	ओ सामर्थ अर्ज सुनो विधाता	119
120.	ओ सामर्थ भक्ति दीजे तुम्हारी	120
121.	हाँ मन रे भक्ति से सुख पावे, जहां से भव	121
122.	हाँ हाँ रे भक्ति कमाओ रे, हरि प्रेम का	122
123.	हाँ हरि भक्ति भाई कर लेना दिन—रात	123
124.	भक्ति बिन मानव कोई न जावे साथ, भाई	124
125.	भक्ति रस भाया, प्रेम से कर ले पान	125
126.	तू इतना तो कर ले बन्दे, भक्ति का भाव	126
127.	भक्ति कर भाई, सद्गुरु से ले सार	127
128.	हां हां रे भक्ति कीजे रे! तू राम भजन में	128
129.	भक्ति तो भाया, हरि भक्ता ने प्यारी	129
130.	भक्ति कर भाई, अपना जन्म सुधार	130
	—:: भक्ति महिमा ::—	
131.	भक्ति कर पाया, निज आत्म का ज्ञान	131
132.	हाँ हाँ रे भक्ति लिखाया रे	132
133.	निर्गुण भक्ति पाया रे, सतगुरु करी सहाई	133
134.	भगति से प्रीति लागी रे, सब दुख हो गया	134
135.	भक्ति से प्रीति लागी, और न भावे काम	135
136.	भगति का मार्ग पाया रे, सतगुरु के दरबार	136
137.	गुरु भक्ति का बाग लगाया सा, लागी नाहिं	137

ॐ सोऽहम् ॐ

क्र	विवरण	पृ.सं.
138.	म्हारे भक्ति को रंग लाग्यो, पल–पल भावे	138
139.	भगति का बगीचा पाया सा, राम नाम का	139
140.	गुरुगम से भक्ति पाया सा, धर आत्म का	140
141.	हाँ रे भक्ति मन भागी रे	141
142.	हाँ हाँ रे चाव म्हारे लाग्यो रे	142
143.	हाँ हाँ रे विरह म्हारे जागी रे	143
	–:: नाम का अंग–9 ::–	
144.	सद्गुरु नाम दान दे दीज्यो, जन्म–जन्म	144
145.	सद्गुरु जी नाम सुनावो जी, मेटो मन की	145
146.	अब तु चेत प्यारे, ले–ले हरि नाम	146
147.	नामों में भाई नाम, ब्रह्म ओमकार	147
148.	तू रट ले ओम हरि नाम, नाम है निर्वाणी	148
149.	बजाले मनवा नाम को नंगारो तू बजाले	149
150.	मन सुनरे हरि नाम की धुन सुनरे	150
151.	क्यों ना राम रंग रांचा रे	151
152.	जगत में सांचो राम जी को नाम	152
153.	कुण न जाने कब टूट जावे, जीवन की लड़ी	153
	–:: फकीरी का अंग–10 ::–	
154.	फकीरी मन में भावे सा, देवो गुरु दात्तार	154
155.	ओ सामर्थ दीजे फकीरी बानो	155
156.	ओ सामर्थ ऐसी फकीरी दीज्यो	156

ॐ सोऽहम् ॐ

क्र	विवरण	पृ.सं.
157.	मोहे ज्ञान फकीरी देवो सा, महर करो	157
158.	म्हारे आशा फकीरी की लागी सा, देवो गुरु	158
159.	फकीरी तोड़े मोह जंजाल	159
160.	फकीरी निर्मल होकर लेना	160
161.	सांची फकीरी गुरु वचनों से, कोई बिरला	161
162.	फकीरी समझे बिरला साधो सूर	162
163.	फकीरा ब्रह्म निष्ठ ब्रह्मज्ञानी	163
	–:: फकीरी महिमा ::–	
164.	मैं असली फकीरी पाया सा, सद्गुरु के	164
165.	ओ म्हारे रंग फकीरी लाग्यो सा, और न	165
166.	मैं तो ज्ञान फकीरी लीना सा, पाई लिया	166
167.	फकीरी गुरुगम से पाया, फकीरी गुरु गम	167
168.	फकीरी रंग लाग गया पूरा, हटाया होवे	168
169.	हाँ हाँ रे फकीरी पायी रे	169
170.	मैं असल फकीरी पायो जी, मिट गयो कर्म	170
	–: ईश्वर का अंग–11 :–	
171.	दर्शन दे देना दिलदार तुम बिन, व्याकुल	171
172.	मैं मुक्ता हूँ माँगनिया, आया तेरे द्वार	172
173.	सांवरिया थारी महिमा पर, अचरज म्हानें	173
174.	सांवरिया थारी महिमा को, कांई करूं बखान	174
175.	मेरे मालिक तू ने, कैसा खेल रचाया	175

ॐ सोऽहम् ॐ

क्र	विवरण	पृ.सं.
	—:: आत्मा का अंग—12 ::—	
176.	आत्मा की भाई बिरला करी पिछाण	176
177.	साधो भाई! अवगत सहन लिखा ले	177
178.	साधो भाई! दुनिया महरम नहीं जाने	178
179.	काँई भूल भरम भरमावे रे, कर ले आत्म	179
180.	साधो भाई! ज्ञान मार्ग में चलणा	180
181.	हाँ जो आत्म पद में लागे, वाँको जन्म	181
182.	जो रहवै ब्रह्म लवलीना, सोही संत परवीना	182
183.	जो आत्मा वित अनुरागी, सोही है बड़	183
184.	जगत में ज्ञानी सदा सुख पाता	184
185.	ओ थाने श्रुति मात जगावे रे, जिज्ञासु जागो	185
186.	तू करले आत्मज्ञान, थारो जब होवे कल्याण	186
187.	सफल जमारा उसका है, जिसको आत्मज्ञान	187
188.	जगत में ब्रह्म ज्ञान आधार, जहाँ से उतरे	188
189.	ओ मत भूले आत्म प्यारा, हो के चूर नशा में	189
190.	कर ल रे मनवा आत्म ज्ञान विचार	190
191.	करल—करल रे म्हारा मनवा, आत्म राम	191
192.	साधो भाई राम अखण्ड अविनाशी	192
193.	साधो भाई आत्म है निज देवा	193
194.	साधो भाई ये साधन सुण लीजे	194
195.	हंसा भाई समझ करो पयाना	195

ॐ सोऽहम् ॐ

क्र	विवरण	पृ.सं.
196.	ओ करले रे आत्म ज्ञान, नर तन अजब	196
197.	ओ करले रे मनवा सत् आत्म की खोज	197
198.	साधो भाई! कर आत्म में डेरा	198
199.	साधो भाई! आत्म सदा अणरोगी	199
200.	साधो भाई! आत्म सब के मांहि	200
201.	हे बीरा रे! आत्म ज्ञान विचारणा, मिट	201
202.	ओ कर्जो मिट गयो रे कर्मा को, ज्ञान पारस	202
203.	ओ झगड़ो मिट गयो रे कर्मा को, आत्म	203
204.	ओ म्हारा कट गया कर्म क्लेश, आत्म पाया	204
205.	साधो भाई! अब मैं, अपने घर को पाया	205
206.	साधो भाई गुरुगम नशा हो आया	206
	—:: तत्त्वमसी का अंग—13 ::—	
207.	हाँ तू है, अजर—अमर अविनाशी	207
208.	है बीरा रे! वही राम तू आप है, जिसे	208
209.	मानव करले रे सत ज्ञान, तेरा रूप अनादि रे	209
210.	करले मनवा अपने आपकी खोज	210
211.	तेरा सत् चित् आनन्द रुप है, क्यों भूल	211
212.	साधो भाई! जो खोजे राम को दूरा	212
	—:: हेली का अंग—14 ::—	
213.	हेली काँई बैठी मुखड़ा न मोड़, पीया जी	213
214.	लगन लगा हरि नाम से म्हारी हेली	214

ॐ सोऽहम् ॐ

क्र	विवरण	पृ.सं.
215.	हेली आत्म ज्ञान विचारो, भव बंधन परे	215
216.	हेली ये करले आत्म विचार, आत्म सुख	216
	—:: बेगम का अंग—15 ::—	
217.	साधो भाई! कर बेगम में वासा	217
218.	साधो भाई! कर बेगम में ड़ेरा	218
219.	आदू धाम हमारा सा, सब का निज मूल	219
220.	महर भई गुरुदेव की, देश दिवाना पा लिया	220
221.	मस्ताना मेरा देश, सतगुरु दिखा दिया	221
222.	मेरी बैगम में है बस्ती	222
223.	बैगम में मेरा वास, रहता निर्वाणी	223
224.	बेगम में भारी मौज, सतगुरु दे दीना	224
225.	साधो भाई! बैगम की गम पाया	225
	—:: एक देव का अंग—16 ::—	
226.	एकोराम देखे सब में, वो ही बड़ा है सब में	226
227.	चेतन अपने आप है, नहीं माया का काम	227
228.	एक हरि को ध्यावो, मत करो बे विचार	228
	—:: पियाजी का अंग—17 ::—	
229.	दर्शन देना दिलहार, तुम बिन व्याकुल भई	229
230.	पिया बिना धूल जमारो, कर ले गहन विचार	230
231.	परम पिया पाया सा, गयी भरमना दूर	231
232.	अखण्ड प्रीतम पायी सा, मानव तन के मांहि	232

ॐ सोऽहम् ॐ

क्र	विवरण	पृ.सं.
233.	अमर पिया पायी सा, सब मांहि भरपूर	233
234.	संतो भाई मिटा दिया सब धोखा	234
235.	साधो भाई अभेद हरि बतलाया	235
236.	क्या गाऊं क्या बतलाऊं, राम मेरा निज नूर	236
	—:: दृढ़ आत्म अनुभव का अंग—18 ::—	
237.	मैं हूं ब्रह्म आत्मा एक, नहीं दूजे का भान	237
238.	मैं अचल ब्रह्म अविनाशी, हूँ मैं स्वयं प्रकाश	238
239.	मैं हूं अचल ब्रह्म अविनाशी	239
240.	मैं हूँ अपने आप अपारा	240
	—:: उल्ट बोध अंग—19 ::—	
241.	साधो भाई! अलख थलख या वाणी	241
242.	साधो भाई! उल्टी वाणी सुन मेरी	242
243.	साधो भाई! मौहे अचम्भा आया	243
	—:: चेतावनी अंग—20 ::—	
244.	जग में दो दिन का है खेल, जग में दो	244
245.	गाड़ी जावे रे अमर लोक, बैठ जावो गाड़ी	245
246.	चालो रे अमर लोक, अवसर आग्यो रे	246
247.	भूल करे मत भाई रे, मनुष्य जन्म को पाके	247
248.	मनारे मत चाले अफूटो	248
249.	मनख जमारो अवसर मोटो, नहीं	249
250.	मानव तन का नहीं ऐतबार, जग में थोड़ा	250

ॐ सोऽहम् ॐ

क्र विवरण पृ.सं.

—:: प्रश्न—उत्तर का अंग—21 ::—

251. हे बाई ! अपना हाल बतावो 251
252. साधो भाई मैं हूं सेठ पुराणा 252
253. साधो भाई ये पद कैसे पावे 253
254. साधो भाई सो चेतन को पावे 254
255. साधो भाई कहो मुक्ति कैसी 255
256. साधो भाई ! जीवन मुक्त प्रमाणा 256

—:: पाखण्ड का अंग—22 ::—

257. साधो भाई मतवादी नहीं पाया 257
258. जगत में बहुत ढ़ोंगी गुरु चेला 258
259. अनपढ़ गुरु दुख देला रे, दुनिया में मुंडे 259
260. साधो भाई ! दुनिया खा रही धोखा 260
261. साधो भाई मूर्ख माने नहीं 261

—:: अन्य ::—

262. कर मन सत्पुरुषा की सेवा 262
263. ओ सुणले संता को उपदेश, सुणले 263
264. सोई संत म्हारे मन भावे, जो आत्म ज्ञान 264
265. साधो भाई सो पद है सुखदाई 265

सतगुरु भगवान की आरती 266

ॐ सोऽहम् ॐ

क्र विवरण पृ.सं.

गुरु महाराज के वरिष्ठ शिष्य संत श्री रामानन्द (रामनारायण) जी की वाणियां

1. सद्गुरु जी कृपा कीज्यो, मन चरणा में 268
2. सद्गुरु देवे ज्ञान सदा सुखदायी, सदा 269
3. तू अपने आप को जान, थारी मिटज्या 270
4. क्यूं भटक रयो भव माहिं, तेरो आत्मराम 271
5. सद्गुरु मेरा देव मिल गया त्यागी, मिल गया 272
6. निर्गुण सगुण को समझे तो, तोहे खोल 273
7. फकीरी लीना हमने धार 274
8. मार्ग झीणा रे 275
9. भक्ति करले रे 276
10. संत महिमा भारी जगत में, संत महिमा 277

गुरु महाराज के शिष्य भूमानन्दजी (गिर्राज) की वाणियां

1. सतगुरु जी म्हाने ऐसो ज्ञान दियो 279
2. मैंने ऐसा सदगुरु पाया सा, किया भ्रम सब 280
3. शब्द सुनाकर भ्रम मिटाया, किया आत्म 281
4. साधो भाई सदगुरु पर उपकारा 282
5. सदगुरु देव दयालू पाया, देव दयालू पाया ओ 283
6. सत्संग है मुक्ति द्वार, जन्म सुधारे तो 284
7. मैं हूं सदा साक्षी इकसारा 285

ॐ सोऽहम् ॐ

क्र	विवरण	पृ.सं.
	गुरु महाराज के शिष्य विद्यानन्द जी (खुशीराम) की वाणियां	
1.	सुणले रे मनवा, घट–घट राम आधार	287
2.	आपकी कृपा से गुरुवर, मैं मस्ताना हो गया	288
3.	आत्म को गुरु से पायो रे, राम को सदगुरु	289
4.	सद्गुरुजी मिलग्या रे, सद्गुरुजी मिलग्या रे	290
5.	असली मौज फकीरी में	291
	गुरु महाराज के शिष्य मनसा राम जी की वाणियां	
1.	दीनदयाला, हो मतवाला, गणपत जी	293
2.	या सतगुरु से अरज हमारी, भव से पार	294
3.	करो धर्म की जाण, आनन्द आवेला जी	295
4.	धर्म ने धारले रे........,बीरा नहीं, जीवन ऐड़ो	296
5.	मूरख मनमानी मत कर रे, मान भाई सतगुरु का	297
6.	मैं गुरु शरण में बैठ, ब्रह्म संग प्रीत लगायो	298
7.	मैं तो राम नाम का सार, गुरु से पा लीना	299
8.	अरे हंसला करो विचार सार सत्संग में	300
9.	अरे तू प्रीत राम से करले रे, तिर जावे पल	301
	–:: संध्या श्रद्धासुमन ::–	302–308
	–:: वेदान्त–शब्दकोश ::–	309–320